थार की रेत पिघला रही हिमालय के ग्लेशियर

क्या आप यकीन करेंगे कि हिमालय के बढ़ते तापमान के लिए राजस्थान भी जिम्मेदार है? यह चौंकाने वाला खुलासा एक अमेरिकी रिपोर्ट में हुआ है। बदलता मौसम और रेगिस्तान से उठने वाली आंधियां और बवंडर हिमालय के ग्लेशियरों को पिघला रहे हैं।

भास्कर न्यूज | जयपुर. हाल ही जब हिम ग्लेशियरों का अध्ययन किया गया तो वहां थार की रेत मिली। इन कणों के साथ लोहे और कुछ खनिजों के अंश भी मिले। बर्फ की संरचना में ये मिश्रण सौर विकिरण को सोख रहा है, इससे उपजी गर्मी ग्लेशियरों को पिघला रही है। इसे ब्लैक कार्बन भी कहा जाता है। पढ़िए पूरी रिपोर्ट-

कैसे पहुंची हिमालय में रेत

■ चैपमैन यूनिवर्सिटी (अमेरिका) के प्रोफेसर रमेश पी सिंह के मुताबिक देश के पश्चिमी इलाके से उठने वाली आंधियों के साथ रेत के कण पश्चिमी हिमालय तक पहुंच जाते हैं। अमेरिकन जियोफिजिकल रिसर्च की प्रतिष्ठित मैग्जीन जर्नल ऑफ जियोफिजिकल रिसर्च में यह रिसर्च पेपर छप चुका है। इसके मुताबिक, धूल के कणों ने वातावरण में मौजूद वाष्प कणों व कार्बन मोनो-ऑक्साइड की मात्रा बढ़ा दी है। इसी के चलते पश्चिमी हिमालय क्षेत्र में वायुमंडल की ट्रोपोस्फीयर परत गर्म हो रही है। लगातार धूल जमते रहने से इस क्षेत्र के ग्लेशियरों के पिघलने की रफ्तार तेज हो गई है।

15,000
ग्लेशियर हैं हिमालय क्षेत्र में

12,000
वर्ग किमी में फैले हैं ये ग्लेशियर

अकेले उत्तराखंड में
4,000
ग्लेशियर

आगे बढ़ रहा थार

■ थार का मरूस्थल रेतीले पहाड़ों का विस्तार है। कुछ हिस्सा राजस्थान में है, कुछ पाकिस्तान में। थार का रेगिस्तान 2 लाख वर्ग किमी दायरे में फैला हुआ है। चिंताजनक यह है कि यह दायरा लगातार बढ़ रहा है।

1998 में	आज की स्थिति
1,96,150 वर्ग किमी में रेगिस्तान फैला हुआ था	2,08,110 वर्ग किमी हो गया है इसका दायरा

पंजाब में भी अब मरूस्थलीय घास दिखाई देने लगी है।

मैदानी इलाकों की औद्योगिक इकाइयों ने खेल और बिगाड़ा

■ प्रो. सिंह बताते हैं, गंगा के मैदानी इलाको में लगी औद्योगिक इकाइयों से निकले प्रदूषण, बायोमास के जलने व कभी-कभी लगने वाली जंगल की आग के चलते भी ग्लेशियरों के पिघलने की गति तेज हो गई है।

रेत जमी बर्फ ज्यादा विकिरण सोखने लगती है

■ जब ग्लेशियरों पर रेत जमती है तो सतह ज्यादा विकिरण सोखने लगती है। यह सामान्य से ज्यादा गर्म हो जाती है। इसी के चलते बर्फ पिघलने लगती है। ग्लेशियर की सफेद बर्फ सूर्य किरणों को परावर्तित कर देती है।

सबसे ज्यादा असर मार्च-जून में, धूल के असर से बनता है कम दबाव का क्षेत्र

■ विशेषज्ञों के मुताबिक मार्च से जून के दौरान राजधानी दिल्ली व आसपास के इलाकों में कम दबाव का क्षेत्र बनने पर पश्चिमी राजस्थान व थार की रेत आंधी के साथ उड़कर वहां पहुंच जाती है जो दिल्ली व एनसीआर इलाके को अपनी गिरफ्त में ले लेती है। इन्हीं महीनों के दौरान ग्लेशियर्स को ज्यादा नुकसान होता है।